● कथा माला 8

अन्ताक्षरी

● टोबा टेकसिंह

टोबा टेकसिंह

बँटवारे के दो-तीन साल बाद पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सरकारों को ख्याल आया कि साधारण कैदियों की तरह पागलों का भी तबादला होना चाहिए। यानी जो मुसलमान पागल हिन्दुस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें पाकिस्तान पहुँचा दिया जाये और जो हिन्दू और सिख पाकिस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें हिन्दुस्तान के हवाले कर दिया जाये।

मालूम नहीं यह बात ठीक थी या नहीं। बहरहाल बुद्धिमानों के फैसले के अनुसार इधर-उधर ऊँचे स्तर की कॉन्फ्रेंसें हुईं और आखिर एक दिन पागलों के तबादले के लिए नियत हो गया। अच्छी तरह छानबीन की गयी। वे मुसलमान पागल, जिनके अभिभावक हिन्दुस्तान में थे, वहीं रहने दिये गये थे और जो बाकी थे, उन्हें सीमा पर रवाना कर दिया गया था। यहाँ पाकिस्तान से, क्योंकि करीब-करीब सब हिन्दू-सिख जा चुके थे, इसलिए किसी को रखने-रखाने का सवाल ही न पैदा हुआ। जितने हिन्दू-सिख पागल थे, सबके सब पुलिस के संरक्षण में सीमा पर पहुँचा दिये गये। उधर की मालूम नहीं, लेकिन इधर लाहौर के पागलखाने में जब इस तबादले की खबर पहुँची तो बड़ी दिलचस्प और कौतुकपूर्ण बातें होने लगीं। एक मुसलमान पागल, जो बारह बरस से रोज़ाना बाकायदगी के साथ 'ज़मींदार' पढ़ता था, उससे जब उसके दोस्त ने पूछा, 'मौलवी साहब, यह पाकिस्तान क्या होता है?' तो उसने बड़े सोच-विचार के बाद जवाब दिया, हिन्दुस्तान में एक ऐसी जगह है, जहाँ उस्तरे बनते हैं।'

यह जवाब सुनकर उसका मित्र सन्तुष्ट हो गया।

इसी तरह एक सिख पागल ने एक दूसरे सिख पागल से पूछा, 'सरदारजी, हमें हिन्दुस्तान क्यों भेजा जा रहा है? हमें तो वहाँ की बोली भी नहीं आती।'

दूसरा मुस्करा दिया, 'मुझे तो हिन्दुस्तान की बोली आती है — हिन्दुस्तानी बड़े शैतानी आकड़-आकड़ फिरते हैं।'

एक मुसलमान पागल ने नहाते-नहाते 'पाकिस्तान ज़िन्दाबाद' का नारा इस

जोर से बुलन्द किया कि फर्श पर फिसलकर गिरा और अचेत हो गया। कुछ पागल ऐसे भी थे, जो पागल नहीं थे। इनमें अधिकतर ऐसे कातिल थे, जिनके रिश्तेदारों ने अफसरों को दे-दिलाकर पागलखाने भिजवा दिया था कि वे फाँसी के फन्दे से बच जायें।

ये कुछ-कुछ समझते थे कि हिन्दुस्तान का क्यों विभाजन हुआ है और यह पाकिस्तान क्या है, लेकिन सभी घटनाओं से ये भी बेखबर थे। अखबारों से कुछ पता नहीं चलता था और पहरेदार सिपाही अनपढ़, जाहिल थे। उनकी बातचीत से भी वे कोई नतीजा नहीं निकाल सकते थे। उनको सिर्फ इतना मालूम था कि एक आदमी मुहम्मद अली जिन्ना है, जिसको कायदे-आज़म कहते हैं। उसने मुसलमानों के लिए एक अलग मुल्क बनाया है, जिसका नाम पाकिस्तान है। यह कहाँ है? इसकी स्थिति क्या है? इसके विषय में वे कुछ नहीं जानते थे। यही कारण है कि पागलखाने में वे सब पागल, जिनका दिमाग पूरी तरह से खराब नहीं था, इस ऊहापोह में थे कि वे पाकिस्तान में हैं या हिन्दुस्तान में? अगर हिन्दुस्तान में हैं तो पाकिस्तान कहाँ है और अगर वे पाकिस्तान में हैं तो यह कैसे हो सकता है कि वे कुछ अर्सा पहले यहाँ रहते हुए भी हिन्दुस्तान में थे। एक पागल तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के चक्कर में ऐसा पड़ा कि और ज्यादा पागल हो गया। झाड़ू देते-देते एक दिन दरख्त पर चढ़ गया और एक टहनी पर बैठकर दो घंटे लगातार भाषण देता रहा, जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के नाज़ुक मामले पर था। सिपाहियों ने उसे नीचे उतरने के लिए कहा तो वह और ऊपर चढ़ गया। डराया-धमकाया गया तो उसने कहा, 'मैं न हिन्दुस्तान में रहना चाहता हूँ न पाकिस्तान में, मैं इस पेड़ पर ही रहूँगा।'

बड़ी मुश्किल के बाद जब उसका दौरा ठंडा पड़ गया, तो वह नीचे उतरा और अपने हिन्दू-सिख दोस्तों से गले मिल-मिलकर रोने लगा। इस ख्याल से उसका दिल भर आया कि वे उसे छोड़कर हिन्दुस्तान चले जायेंगे।

एक एम० एस-सी० पास रेडियो इंजीनियर, जो मुसलमान था और दूसरे

पागलों से बिलकुल अलग-थलग बाग की एक खास रौश पर सारा दिन खामोश टहलता रहता था, में यह तब्दीली प्रकट हुई कि उसने अपने तमाम कपड़े उतारकर दफेदार के हवाले कर दिये और नंग-धड़ंग सारे बाग में चलना शुरू कर दिया।

एक मोटे मुसलमान पागल ने, जो मुस्लिम लीग का एक सक्रिय कार्यकर्ता रह चुका था और दिन में पन्द्रह-सोलह बार नहाया करता, एकदम नयी आदत छेड़ दी। उसका नाम मुहम्मद अली था। चुनांचे उसने एक दिन अपने जंगले में घोषणा कर दी कि वह कायदे-आज़म मुहम्मद अली जिन्ना है। उसकी देखा-देखी एक सिख पागल मास्टर तारासिंह बन गया। करीब था कि उस जंगले में खून-खराबा हो जाये, मगर दोनों को खतरनाक पागल करार देकर अलग-अलग बन्द कर दिया गया।

लाहौर का एक नौजवान हिन्दू वकील था, जो मुहब्बत में पड़कर पागल हो गया था। जब उसने सुना कि अमृतसर हिन्दुस्तान में चला गया है तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसी शहर की एक हिन्दू लड़की से उसे प्रेम हो गया था। यद्यपि उसने उस वकील को ठुकरा दिया था, मगर दीवानगी की हालत में भी वह उसको भूला नहीं था। चुनांचे वह उन तमाम मुस्लिम लीडरों को गालियाँ देता था, जिन्होंने मिल-मिलाकर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े कर दिये। उसकी प्रेमिका हिन्दुस्तानी बन गयी थी और वह पाकिस्तानी।

जब तबादले की बात शुरू हुई तो वकील को पागलों ने समझाया कि वह दिल छोटा न करे, उसको हिन्दुस्तान भेज दिया जायेगा — उस हिन्दुस्तान में, जहाँ उसकी प्रेमिका रहती है, मगर वह लाहौर छोड़ना नहीं चाहता था। इस ख्याल से कि अमृतसर में उसकी प्रैक्टिस नहीं चलेगी। यूरोपियन वार्ड में दो ऐंग्लो-इंडियन पागल थे। उनको जब मालूम हुआ कि हिन्दुस्तान को आज़ाद करके अंग्रेज़ चले गये हैं तो उनको बड़ा दुःख हुआ। वे छिप-छिपकर घंटों इस समस्या पर बातचीत करते रहते कि पागलखाने में उनकी हैसियत किस तरह की होगी — यूरोपियन वार्ड रहेगा या जायेगा। ब्रेकफास्ट मिला करेगा

या नहीं। क्या उन्हें डबल रोटी बनाम ब्लडी इंडियन चपाती तो जहरमार नहीं करनी पड़ेगी?

एक सिख था, जिसको पागलखाने में दाखिल हुए पन्द्रह वर्ष हो चुके थे। हर समय उसकी ज़बान से अजीब-व-गरीब शब्द सुनने में आते थे, 'ओपड़ दी गड़-गड़ दी एनेक्स दी बेध्याना दी मुंग दी दाल ऑफ दी लालटेन।' वह दिन को सोता था न रात को। पहरेदारों का यह कहना था कि पन्द्रह वर्ष के इस लम्बे अर्से में वह एक क्षण के लिए भी न सोया था। लेटता भी नहीं था। अलबत्ता कभी-कभी किसी दीवार के साथ टेक लगा लेता था। हर समय खड़े रहने से उसके पाँव सूज गये थे। पिंडलियाँ भी फूल गयी थीं, मगर इस शारीरिक तकलीफ के बावजूद लेटकर आराम नहीं करता था। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और पागलों के तबादले के विषय में जब कभी पागलों में चर्चा होती थी तो वह ध्यान से सुनता था। कोई उससे पूछता कि उसका क्या ख्याल है तो वह बड़ी गम्भीरता से जवाब देता 'ओपड़ दी गड़-गड़ दी एनेक्स दी बेध्याना दी मुंग दी दाल ऑफ दी पाकिस्तान गवर्नमेंट।'

लेकिन बाद में 'ऑफ दी पाकिस्तान गवर्नमेंट' की जगह 'ऑफ दी टोबा टेकसिंह' ने ले ली और उसने दूसरे पागलों से पूछना शुरू किया कि टोबा टेकसिंह कहाँ है, कहाँ का रहने वाला है? लेकिन किसी को भी मालूम नहीं था कि वह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में। जो बताने की कोशिश करते थे, खुद इस उलझन में फँस जाते थे कि स्यालकोट पहले हिन्दुस्तान में होता था, पर अब सुना है कि पाकिस्तान में है। क्या पता है कि लाहौर जो अब पाकिस्तान में है, कल हिन्दुस्तान में चला जायेगा या सारा हिन्दुस्तान ही पाकिस्तान बन जाये और यह भी कौन सीने पर हाथ रखकर कह सकता था कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों किसी दिन सिरे से गायब न हो जायेंगे।

एक सिख पागल के केश छिदरे होकर थोड़े ही रह गये थे। चूँकि वह बहुत कम नहाता था, दाढ़ी और बाल आपस में जम गये थे, जिसके कारण उसकी शक्ल बड़ी भयानक हो गयी थी। लेकिन वह आदमी किसी का नुकसान

नहीं करता था। पन्द्रह वर्षों में उसने किसी से झगड़ा-फसाद नहीं किया था। पागलखाने के जो पुराने नौकर थे, वे उसके बारे में इतना जानते थे कि टोबा टेकसिंह में उसकी कई ज़मीनें थीं। अच्छा खाता-पीता ज़मींदार था कि अचानक ही दिमाग उलट गया। उसके रिश्तेदार लोहे की मोटी-मोटी जंजीरों में उसे बाँधकर लाये और पागलखाने में दाखिल करा गये।

महीने में एक बार मुलाकात के लिए ये लोग आते थे और उसकी राज़ी-खुशी मालूम करके चले जाते थे। एक मुद्दत तक यह क्रम चलता रहा, लेकिन जब पाकिस्तान-हिन्दुस्तान की गड़बड़ शुरू हो गयी तो उनका आना बन्द हो गया।

उसका नाम बिशनसिंह था, मगर सब उसे टोबा टेकसिंह कहते थे। उसे बिलकुल यह मालूम न था कि दिन कौन-सा है, महीना कौन-सा है या कितने साल बीत चुके हैं। लेकिन हर महीने जब उसके स्वजन और सम्बन्धी उससे मिलने आते तो उसे अपने-आप पता चल जाता था। चुनांचे वह एक दफेदार से कहता कि उसके मुलाकाती आ रहे है। उस दिन वह अच्छी तरह नहाता,

बदन पर खूब साबुन घिसता और सिर में तेल लगाकर कंघी करता। अपने कपड़े, जो वह कभी इस्तेमाल नहीं करता था, निकलवाकर पहनता और यूँ सज-बनकर मिलने वालों के पास जाता। वे उससे कुछ पूछते तो वह चुप रहता या कभी-कभी 'ओपड़ दी गड़-गड़ दी एनेक्स दी बेध्याना दी मुंग दी दाल ऑफ दी लालटेन' कह देता।

उसकी एक लड़की थी जो हर महीने एक अंगुल बढ़ती-बढ़ती पन्द्रह वर्ष में जवान हो गयी थी। बिशनसिंह उसे पहचानता ही न था। जब वह बच्ची थी, तब भी अपने बाप को देखकर रोती थी। जवान हुई, तब भी उसकी आँखों से आँसू बहते थे।

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का किस्सा शुरू हुआ तो उसने दूसरे पागलों से पूछना शुरू किया कि टोबा टेकसिंह कहाँ है। जब सन्तोषजनक उत्तर न मिला तो उसकी कुरेद दिन-ब-दिन बढ़ती गयी। अब मुलाकाती भी नहीं आते हैं। पहले तो उसके दिल की आवाज़ भी बन्द हो गयी थी, जो उसे उनके आने

की खबर दे दिया करती थी।

उसकी बड़ी इच्छा थी कि वे लोग आयें, जो उससे सहानुभूति प्रकट करते थे और उसके लिए फल-मिठाइयाँ और कपड़े लाते थे। वह यदि उनसे पूछता कि टोबा टेकसिंह कहाँ है तो वे निश्चित बता देते कि पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में है, क्योंकि उसका विचार था कि वे टोबा टेकसिंह ही से आते हैं, जहाँ उसकी ज़मीन है।

पागलखाने में एक पागल ऐसा भी था जो अपने को खुदा कहता था। उससे जब एक दिन बिशनसिंह ने पूछा कि टोबा टेकसिंह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में, तो उसने अपनी आदत के मुताबिक पहले कहकहा लगाया और कहा, 'वह न पाकिस्तान में है और न हिन्दुस्तान में, इसलिए कि हमने अभी तक हुक्म नहीं दिया।'

बिशनसिंह ने उस खुदा से कई बार मिन्नत-खुशामद से कहा कि वह उसे हुक्म दे दे ताकि झंझट खत्म हो, मगर वह बहुत व्यस्त था, क्योंकि उसे और

भी अनगिनत हुक्म देने थे। एक दिन तंग आकर वह उस पर बरस पड़ा, 'ओपड़ दी गड़-गड़ दी एनेक्स दी बेध्याना दी मुंग दी दाल ऑफ वाहे गुरुजी दा खालसा एण्ड वाहे गुरुजी दी फतह — जो बोले सो निहाल — सत्त श्री अकाल!'

उसका शायद यह मतलब था कि तुम मुसलमानों के खुदा हो — सिखों के खुदा होते तो ज़रूर मेरी सुनते।

तबादले के कुछ दिन पहले टोबा टेकसिंह का एक मुसलमान दोस्त मुलाकात के लिए आया। पहले वह कभी नहीं आया था। जब बिशनसिंह ने उसे देखा तो एक तरफ हटा और वापस जाने लगा। मगर सिपाहियों ने उसे रोका, 'यह तुमसे मिलने आया है — तुम्हारा दोस्त फजलुद्दीन है।'

बिशनसिंह ने फजलुद्दीन को एक नज़र देखा और कुछ बड़बड़ाने लगा। फजलुद्दीन ने आगे बढ़कर उसके कन्धे पर हाथ रखा, 'मैं बहुत दिनों से सोच रहा था कि तुमसे मिलूँ, लेकिन फुर्सत ही न मिली — तुम्हारे सब आदमी राज़ी-खुशी हिन्दुस्तान चले गये थे। मुझसे जितनी मदद हो सकी, मैंने

की — तुम्हारी बेटी रूपकौर . . . ।'

वह कुछ कहते-कहते रुक गया। बिशनसिंह कुछ याद करने लगा, 'बेटी रूपकौर?'

फजलुद्दीन ने कुछ रुककर कहा, 'हाँ ...वह ...भी ठीक-ठाक है। . . . उसके साथ ही चली गयी थी।'

बिशनसिंह चुप रहा। फजलुद्दीन ने कहना शुरू किया, 'उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम्हारी राज़ी-खुशी पूछता रहूँ। अब मैंने सुना है कि तुम हिन्दुस्तान जा रहे हो — भाई बलबीरसिंह और वधावासिंह से मेरा सलाम कहना — और बहन अमृतकौर से भी। भाई बलबीरसिंह से कहना — फजलुद्दीन राज़ी-खुशी है। दो भूरी भैंसें, जो वे छोड़ गये थे, उनमें से एक ने कट्टा दिया है, दूसरी के कट्टी हुई थी, पर वह छः दिन की होकर मर गयी। . . . और . . . और मेरे लायक जो खिदमत हो, कहना। हर वक्त तैयार हूँ। . . . और यह तुम्हारे लिए थोड़े-से भरुण्डे लाया हूँ।'

बिशनसिंह ने भरुण्डों की पोटली लेकर पास खड़े सिपाही के हवाले कर दी और फजलुद्दीन से पूछा, 'टोबा टेकसिंह कहाँ है?'

'टोबा टेकसिंह!' उसने तनिक आश्चर्य से कहा, 'कहाँ है? वहीं है, जहाँ था।'

बिशनसिंह ने पूछा, 'पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में?'

'हिन्दुस्तान में — नहीं-नहीं, पाकिस्तान में।' फजलुद्दीन बौखला-सा गया।

बिशनसिंह बड़बड़ाता चला गया, 'ओपड़ दी गड़-गड़ दी एनेक्स दी बेध्याना दी मुंग दी दाल ऑफ दी पाकिस्तान एण्ड हिन्दुस्तान ऑफ दी दुर फिट्टे मुँह!'

तबादले की तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं। इधर-से-उधर और उधर-से-इधर आने वाले पागलों की सूचियाँ पहुँच गयी थीं और तबादले की तारीख भी निश्चित हो चुकी थी। सख्त सर्दियाँ थीं। लाहौर के पागलखाने से हिन्दू-सिख पागलों से भरी लारियाँ पुलिस के दस्ते के साथ रवाना हुईं। सम्बन्धित अफसर भी उनके साथ थे। वागाह के बार्डर पर दोनों ओर के सुपरिन्टेन्डेन्ट एक-दूसरे से मिले और प्रारंभिक कार्रवाई खत्म होने के बाद तबादला शुरू हो गया, जो

रात-भर जारी रहा।

पागलों को लारियों से निकालना और उनको दूसरे अफसरों के हवाले करना बड़ा कठिन काम था। कुछ तो बाहर निकलते ही नहीं थे, जो निकलने को तैयार होते, उनको सँभालना मुश्किल होता, क्योंकि इधर-उधर भाग उठते थे। जो नंगे थे, उनको कपड़े पहनाये जाते तो वे फाड़कर अपने शरीर से अलग कर देते। कोई गालियाँ बक रहा है तो कोई गा रहा है। आपस में लड़-झगड़ रहे हैं और रो रहे हैं, बक रहे हैं। कान पड़ी आवाज़ सुनायी नहीं देती थी। पागल स्त्रियों का शोरगुल अलग था और सर्दी इतने कड़ाके की थी कि दाँत से दाँत बज रहे थे।

अधिकतर पागल इस तबादले को नहीं चाहते थे। इसलिए कि उनकी समझ में नहीं आता था कि उन्हें अपनी जगह से उखाड़कर कहाँ फेंका जा रहा है। थोड़े से वे जो सोच-समझ सकते थे, 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगा रहे थे। दो-तीन बार झगड़ा होते-होते बचा, क्योंकि कुछ हिन्दुओं और सिखों को

ये नारे सुनकर तैश आ गया था।

जब बिशनसिंह की बारी आयी और जब उसको दूसरी ओर भेजने के सम्बन्ध में अधिकारी लिखत-पढ़त करने लगे तो उसने पूछा, 'टोबा टेकसिंह कहाँ है? पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में?'

सम्बन्धित अधिकारी हँसा और बोला, 'पाकिस्तान में।'

यह सुनकर बिशनसिंह उछलकर एक तरफ हटा और दौड़कर अपने शेष साथियों के पास पहुँच गया। पाकिस्तानी सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और दूसरी तरफ ले जाने लगे, किन्तु उसने चलने से इन्कार कर दिया, 'टोबा टेकसिंह कहाँ है?' और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, 'ओपड़ दी गड़-गड़ दी एनेक्स दी बेध्याना दी मुंग दी दाल ऑफ टोबा टेकसिंह एण्ड पाकिस्तान!'

उसे बहुत समझाया गया, 'देखो, टोबा टेकसिंह अब हिन्दुस्तान में चला गया है — यदि नहीं गया है तो उसे तुरन्त ही भेज दिया जायेगा।' किन्तु वह न माना। जब ज़बरदस्ती दूसरी ओर उसे ले जाने की कोशिशें की गयीं तो

वह बीच में एक स्थान पर इस प्रकार अपनी सूजी हुई टाँगों पर खड़ा हो गया, जैसे अब कोई ताकत उसे वहाँ से नहीं हटा सकेगी। क्योंकि आदमी बेजार था, इसलिए उसके साथ ज़बरदस्ती नहीं की गयी, उसको वहीं खड़ा रहने दिया गया और शेष काम होता रहा।

सूरज निकलने से पहले स्तब्ध खड़े बिशनसिंह के गले से गगनभेदी चीख निकली। इधर-उधर से कई अफसर दौड़े आये और देखा कि वह आदमी, जो पन्द्रह वर्ष तक दिन-रात अपनी टाँगों पर खड़ा रहा था, औंधे मुँह लेटा था। इधर काँटेदार तारों के पीछे हिन्दुस्तान था — उधर वैसे ही काँटेदार तारों के पीछे पाकिस्तान। बीच में ज़मीन के उस टुकड़े पर, जिसका कोई नाम नहीं था, टोबा टेकसिंह पड़ा था।

लेखक के बारे में

सआदत हसन मण्टो का जन्म 11 मई, 1912 को सम्बराला जिला लुधियाना, में हुआ था। अपने 42 वर्ष की ज़िन्दगी में मण्टो एक संवेदनशील कहानीकार के रूप में कितने ही पत्र पत्रिकाओं से जुड़े रहे। उन्होंने अनगिनत कहानियां, नाटक, रेडियो-वार्ता, लेख आदि लिखे, कई फिल्मों की पटकथायें लिखीं और 'बगैर उन्वान के' नाम से एक उपन्यास लिखा। वे एक ऐसे कहानीकार थे जिसने अपनी कहानियों में "असली" आदमी की पहचान दी और उसे भरे बाजार में चौराहे पर ला खड़ा किया और बुलन्द आवाज़ में कहा—"ये वो आदमी है जिसे तुम सदियों से नष्ट करने की कोशिश कर रहे हो, यह मैं नहीं होने दूँगा।"

मण्टो का कहानी लेखन, जलियांवाला बाग के खूनी हादसे के दौर से प्रेरित हुआ और विभाजन के दर्दनाक दौर की सच्ची तस्वीर पेश की। मण्टो की मृत्यु 18 जनवरी, 1955 में हुई।

मुख्य कथा संग्रह : "आतिशपारे", "सड़क के किनारे", "गुलाब का फूल", "मंटोनामा", "शैतान" इत्यादि।

ये अफ़साने दबी हुई चिंगारियां हैं। इनको शोलों में तब्दील करना पढ़ने वालों का काम है।

— सआदत हसन मण्टो
अमृतसर, 5 जनवरी, 1936
[आतशपारे (प्रथम कहानी संग्रह) की भूमिका]

आपकी प्रतिक्रिया के इन्तजार में —
शिवसिंह नयाल
'अलारिप्पु'
बी-6/62 पहली मंजिल, सफदरजंग इन्क्लेव,
नई दिल्ली-110029

मुद्रक : न्यू एस प्रिंटिंग प्रेस, नई दिल्ली :- 110055